कृषक समृद्धि की दिशा में खेत बचाओ अभियान

शुभ्रांशु सिंह[1], रोहन शेरावत[1], पुष्पेन्द्र यादव[1], अमन सिंह[2] और **देवेश पाठक[2]**

"'खेत बचाओ अभियान' सरकार द्वारा कृषि भूमि, मृदा स्वास्थ्य और जल संसाधनों के संरक्षण के उद्देश्य से शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है तथा देश की बड़ी जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, भूमि क्षरण, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए 'खेत बचाओ अभियान' किसानों को जागरूक बनाने, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने तथा कृषि संसाधनों के संरक्षण की दिशा में कार्य करता है। इस अभियान की शुरुआत 1 जून 2026 को मध्य प्रदेश के रायसेन जिले से की गई और इसे पूरे देश में व्यापक स्तर पर संचालित किया गया। इस अभियान के अंतर्गत मृदा परीक्षण, जल संरक्षण, फसल विविधीकरण, प्राकृतिक खेती, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रसार पर विशेष बल दिया गया। अभियान का उद्देश्य केवल कृषि भूमि को संरक्षित करना ही नहीं, बल्कि किसानों की आय में वृद्धि, खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करना तथा पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना भी है। इस अभियान को सुचारू रूप से किसानों, कृषि वैज्ञानिकों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा सरकारी संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से संपन्न किया गया।"

हमारे देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर करती है। किसानों की मेहनत और कृषि उत्पादन ही देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। किंतु वर्तमान समय में कृषि भूमि पर बढ़ते दबाव, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, जलवायु परिवर्तन, मृदा उर्वरता में कमी तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण खेती का भविष्य कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि भूमि, मृदा और जल संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। इसी उद्देश्य

सारणी: खेत बचाओ अभियान के प्रमुख कार्य एवं लाभ

कार्य क्षेत्र	प्रमुख गतिविधियां	किसानों को लाभ
भूमि संरक्षण	मेड़बंदी, वृक्षारोपण	मृदा कटाव में कमी
मृदा स्वास्थ्य	मृदा परीक्षण, जैविक खाद	उर्वरता में वृद्धि
जल संरक्षण	ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन	जल की बचत
फसल प्रबंधन	फसलचक्र, मिश्रित खेती	उत्पादन में स्थिरता
किसान प्रशिक्षण	शिविर एवं गोष्ठियां	ज्ञान एवं जागरूकता में वृद्धि
पर्यावरण संरक्षण	हरित आवरण बढ़ाना	जलवायु संतुलन
तकनीकी सहायता	आधुनिक कृषि तकनीक	लागत में कमी एवं लाभ में वृद्धि

[1]कृषि विस्तार प्रभाग, भाकृअनुप, कृषि अनुसंधान भवन-I, पूसा, नई दिल्ली-110012; [2]आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या-224229 (उत्तर प्रदेश)

प्राकृतिक खेती बनाए मृदा को स्वस्थ

प्राकृतिक खेती से कम लागत में बेहतर उत्पादन

को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा 'खेत बचाओ अभियान' प्रारंभ किया गया।

यह अभियान किसानों को उनकी भूमि और प्राकृतिक संसाधनों के महत्व के प्रति जागरूक करने तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह केवल खेतों को बचाने का कार्यक्रम नहीं, बल्कि किसानों के भविष्य, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और देश की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने का एक व्यापक प्रयास है।

इस अभियान की शुरुआत 1 जून 2026 को की गई तथा यह अभियान 1 जून से 30 जून 2026 तक देशव्यापी स्तर पर चलाया गया। अभियान के सफल संचालन में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालयों तथा राज्य कृषि विभागों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अभियान के दौरान किसानों तक वैज्ञानिक कृषि तकनीकों, मृदा संरक्षण, जल प्रबंधन तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी पहुंचाने का प्रयास किया गया। इसके माध्यम से किसानों को यह समझाया गया कि कृषि भूमि केवल वर्तमान की आय का स्रोत नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बहुमूल्य संपत्ति भी है।

अभियान के उद्देश्य

'खेत बचाओ अभियान' का मुख्य उद्देश्य कृषि भूमि का संरक्षण करते हुए उसकी उत्पादकता और उर्वरता को बनाए रखना है। इसके अंतर्गत जल संरक्षण और कुशल सिंचाई को बढ़ावा देने के साथ किसानों को टिकाऊ कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूक करना तथा कृषि भूमि के अनावश्यक गैर-कृषि उपयोग को रोकना शामिल है।

अभियान के माध्यम से किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी देकर कृषि उत्पादन और उनकी आय में वृद्धि करने पर भी जोर दिया जाता है। इसके साथ ही, खाद्य सुरक्षा को मजबूत करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और कृषि संसाधनों को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना भी इस अभियान के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है।

कृषि भूमि किसी भी किसान की सबसे बड़ी पूंजी होती है। किसान का जीवन, उसकी आय और उसके परिवार का भविष्य खेतों पर निर्भर करता है। यदि कृषि भूमि का संरक्षण नहीं किया गया, तो आने वाले वर्षों में खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित हो सकता है। 'खेत बचाओ अभियान' किसानों को भूमि संरक्षण के महत्व को समझाने का कार्य करता है।

यह अभियान कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर भी जोर देता है। इसके माध्यम से किसानों को यह संदेश दिया जाता है कि

कुशल जल प्रबंधन से बढ़ाएं उत्पादकता

लाभ

'खेत बचाओ अभियान' के माध्यम से किसानों को अनेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो सकते हैं। भूमि और जल संरक्षण से कृषि उत्पादन में स्थिरता आती है, जबकि मृदा की उर्वरता बनाए रखने से फसलों की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार होता है। जल संरक्षण तकनीकों के प्रयोग से सिंचाई लागत कम होने के साथ सीमित जल संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है। फसल विविधीकरण और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने से किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के संवर्धन में भी यह अभियान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सही परामर्श, बेहतर उत्पादन

वैज्ञानिक मार्गदर्शन से समृद्धि की दिशा

भूमि, जल और मृदा का संरक्षण ही कृषि की स्थिरता और समृद्धि का आधार है।

अभियान की प्रमुख गतिविधियां

अभियान के दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनका उद्देश्य किसानों को जागरूक करना और उन्हें व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना रहा:

- किसान जागरूकता शिविरों का आयोजन।
- मृदा परीक्षण कार्यक्रम।
- जल संरक्षण संबंधी प्रशिक्षण।
- फसल प्रबंधन पर किसान गोष्ठियां।
- प्राकृतिक एवं जैविक खेती का प्रचार।
- वृक्षारोपण अभियान।
- सरकारी कृषि योजनाओं की जानकारी।
- कृषि विशेषज्ञों द्वारा परामर्श सेवाएं।

इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को खेती से संबंधित समस्याओं के समाधान और नई तकनीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

भावी संभावनाएं

भविष्य में खेत बचाओ अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाया जा सकता है। ड्रोन तकनीक, सटीक कृषि, डिजिटल भूमि रिकॉर्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कृषि सलाह और जल प्रबंधन प्रणालियां इस अभियान को नई दिशा प्रदान कर सकती हैं। साथ ही ग्रामीण युवाओं को कृषि और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण से जोड़ना भी आवश्यक है। यदि युवा वर्ग खेती को आधुनिक और लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपनाएगा, तो कृषि क्षेत्र का सतत विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

कृषक संदर्भ में उपयोगी अभियान

'खेत बचाओ अभियान' किसानों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सीधे उनकी आजीविका से जुड़ा हुआ है:

भूमि संरक्षण: भूमि सीमित संसाधन है। यदि कृषि भूमि का संरक्षण नहीं किया गया, तो खेती का क्षेत्र सिकुड़ता जाएगा। इसी दिशा में यह अभियान किसानों को भूमि की सुरक्षा और उसके उचित उपयोग के लिए प्रेरित करता है।

मृदा स्वास्थ्य: मृदा की गुणवत्ता कृषि उत्पादन का आधार है। अभियान के माध्यम से किसानों को मृदा परीक्षण, जैविक खाद और संतुलित उर्वरक उपयोग के बारे में जानकारी दी जाती है।

जल प्रबंधन: जल की कमी, कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। ड्रिप सिंचाई, स्प्रिंकलर प्रणाली और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकों को अपनाने पर विशेष बल दिया जाता है।

फसल विविधीकरण: एक ही फसल को लगातार उगाने से मृदा की उर्वरता कम हो सकती है। अभियान किसानों को फसलचक्र और विविधीकरण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आधुनिक तकनीकों का उपयोग: डिजिटल कृषि, मौसम आधारित सलाह, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग किसानों को अधिक लाभकारी खेती की ओर अग्रसर करता है।

विशेष

वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है। बढ़ती जनसंख्या और तेजी से हो रहे शहरी विस्तार के कारण कृषि भूमि का क्षेत्रफल लगातार घट रहा है। अनेक स्थानों पर उपजाऊ भूमि का उपयोग आवासीय और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए किया जा रहा है। दूसरी ओर, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मृदा की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। भूजल स्तर में कमी, अनियमित वर्षा और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं खेती को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना रही हैं। यदि इन चुनौतियों का समय रहते समाधान नहीं किया गया, तो कृषि उत्पादन के साथ-साथ किसानों की आय भी प्रभावित हो सकती है। इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए खेत बचाओ अभियान को प्रभावी और आवश्यक पहल के रूप में अपनाना जरूरी है।

'खेत बचाओ अभियान' कृषि भूमि, मृदा और जल संसाधनों के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल है। यह अभियान किसानों को जागरूक बनाने, कृषि उत्पादन बढ़ाने, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने तथा खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने का कार्य करता है।

वर्तमान समय में जब कृषि अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है, तब खेत बचाओ अभियान की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। किसानों, वैज्ञानिकों, सरकारी संस्थाओं और समाज के सामूहिक प्रयासों से ही इस अभियान को सफल बनाया जा सकता है। खेतों की सुरक्षा ही किसानों की समृद्धि, ग्रामीण विकास और राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा की गारंटी है।